CHAUKHAMBHA ORIENTALIA | CHAUKHAMBHA HEALTHCARE

द्रव्यगुण विज्ञान

(Applied Aspects)

Volume 2

(As per the NCISM Syllabus)

Prof. Makhan Lal
Dr. Ramanand

Pages 516 with photos

725/-

Hindi

Sample PDF Below

PDF

Shop & Save Online at
(Click to visit)

For orders, library supplies, or authorship, click below:

https://www.chaukhambha.com/

Our Offices:

Varanasi, Uttar Pradesh
Golghar, Maidagin - 221001,
+91 73798 84433.

Bangalore, Karnataka
Jayanagar 9th Block - 560041,
+91 81057 40600

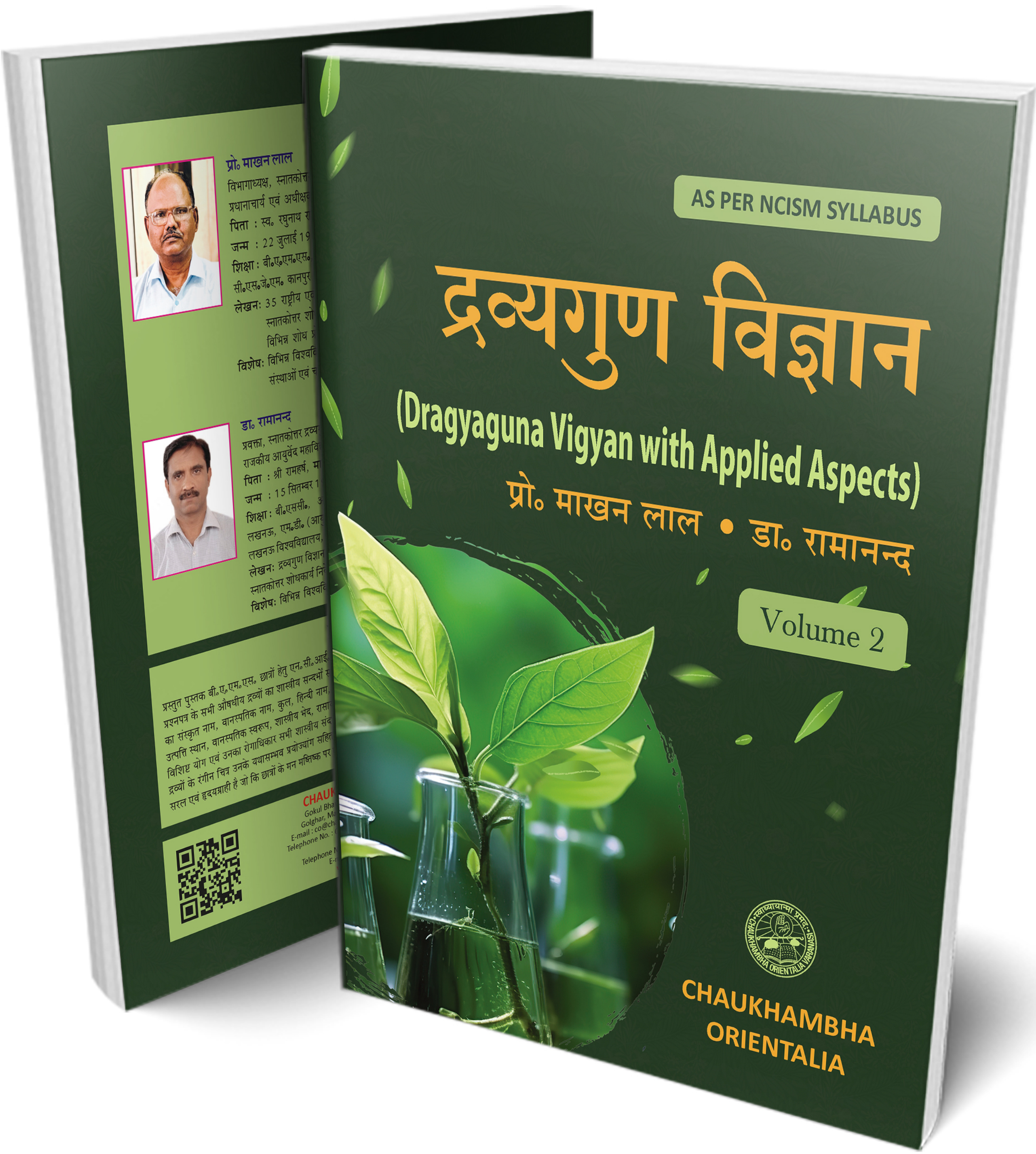
AS PER NCISM SYLLABUS
द्रव्यगुण विज्ञान
(Dragyaguna Vigyan with Applied Aspects)
प्रो॰ माखन लाल • डा॰ रामानन्द
Volume 2
CHAUKHAMBHA
ORIENTALIA
प्रो॰ माखन लाल
डा॰ रामानन्द

प्राक्कथन

आयुर्वेद शास्त्र के अध्ययन और अध्यापन में द्रव्यगुण विज्ञान बहुत ही उपादेय विषय है। आयुर्वेद के आठ अंगों में भले ही इस विषय को स्थान नहीं मिला परन्तु आचार्य चरक ने सूत्रस्थान के अध्याय ३० में ''यतश्चायुष्याण्यनायुमाणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽप्यायुर्वेद:।'' कहकर इस विषय को सम्पूर्ण आयुर्वेद कह दिया है। आयुर्वेद के उद्देश्य की सफलता तभी सम्भव है जब प्रत्येक द्रव्य का सम्यक् ज्ञान कर उसका सदुपयोग किया जाय। चिकित्सा में सिद्धि तभी प्राप्त होती है जब चिकित्सक को द्रव्यों के गुणकर्म का सम्पूर्ण ज्ञान और युक्तिपूर्वक प्रयोग किया जाय।

इस पुस्तक ''द्रव्यगुण विज्ञान (Dravyaguna Vigyan with Applied Aspects)'' को एन०सी०आइ०एस०एम० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार स्नातक पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी द्रव्यों के गुण कर्मों का वर्णन आयुर्वेदीय एवं आधुनिक सिद्धान्तों पर युगानुरूप यथासंभव सामंजस्य बिठाते हुए किया गया है तथा पुस्तक को स्नातक छात्रों के साथ-साथ स्नातकोत्तर छात्रों एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी उपयोगी बनाया गया है।

इस विषय पर अनेक विद्वानों ने अपने ज्ञान को ग्रन्थ रूप दिया है। प्रस्तुत पुस्तक उसी परम्परा का एक प्रगतिशील चरण है। इस पुस्तक के लेखक प्रो० माखन लाल एवं डॉ० रामानन्द द्रव्यगुण विषय के अच्छे जानकार एवं कुशल चिकित्सक हैं इनको विषय के सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक पठन-पाठन का दीर्घकालीन अनुभव है। लेखकों ने इस पुस्तक को एन०सी०आई०एस०एम० के नवीन पाठ्यक्रमानुसार बनाकर हर प्रकार से रुचिकर एवं ग्राह्य बनाने का भरसक प्रयास किया है जो सराहनीय है। इस पुस्तक में लेखकों ने विषय को ससन्दर्भ प्रस्तुत कर सभी द्रव्यों को उनके चित्र सहित वर्णन कर नवीनता प्रदान की है जो छात्रों के मन मस्तिष्क पर छाप छोड़ेगी।

प्रस्तुत रचना छात्रोपयोगी है एवं द्रव्यगुण विज्ञान विषय के क्षेत्र में एक नया स्तम्भ होगी ऐसा मेरा विश्वास है। हमारी तरफ से इस उत्कृष्ट कृति के लिए लेखकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामना।

प्रो० के०एन० द्विवेदी

पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष/डीन आयुर्वेद संकाय

द्रव्यगुण विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी, उ०प्र०

लेखकीय

आयुर्वेद जीवन का विज्ञान है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति को स्वास्थ्ययुक्त दीर्घजीवन प्रदान करना है। जहां स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु स्वस्थवृत्त एवं सदवृत्त का पालन आवश्यक है वहीं रोगी व्यक्ति के रोगनिवारणार्थ औषधि द्रव्यों का युक्तिपूर्वक प्रयोग भी आवश्यक है। चिकित्सा व आहार में आचार्यों ने हित व अहित का विचार करके आहार व औषध द्रव्यों का सम्यक् प्रयोग का वर्णन किया है, उन्होंने अहित द्रव्यों को भी प्राणरक्षा हेतु युक्तिपूर्वक चिकित्सा में प्रयोग किया है, इस सन्दर्भ में काश्यप संहिता का निम्नलिखित श्लोक प्रासंगिक है–

''अन्नं हि प्राणिनों प्राणः तद्युक्ता निहन्त्यसून । विषं प्राणहरं तच्च युक्तियुक्तं रसायनम्।।''

आयुर्वेद में द्रव्यगुण की महत्ता इस बात से परिलक्षित होती है कि आचार्यों ने त्रिसूत्र आयुर्वेद एवं चिकित्सा के चतुष्पाद में द्रव्य को स्थान दिया है। संहिता काल के बाद निघण्टुओं का काल प्रारम्भ हुआ जिसमें यह विषय खूब पुष्पित एवं पल्लवित हुआ, जिसमें सोढ़ल निघण्टु, मदनपाल निघण्टु, धन्वन्तरि निघण्टु, राजनिघण्टु, भाव प्रकाश निघण्टु एवं अत्याधुनिक प्रियनिघण्टु का सराहनीय योगदान है।

इस पुस्तक के मूल सन्दर्भ बृहत्त्रयी, लघुत्रयी, सोढल निघण्टु, कैय्यदेव निघण्टु, धन्वन्तरि निघण्टु, मदनपालनिघण्टु, राजनिघण्टु, भाव प्रकाश निघण्टु, प्रियनिघण्टु, यादवजी कृत द्रव्यगुण विज्ञान, आचार्य प्रियव्रत शर्मा कृत द्रव्यगुण विज्ञान, नामरुपज्ञानम्, द्रव्यगुणकोश, के साथ-साथ अन्य ग्रन्थों से भी लिए गये हैं जैसे– डा. जे.एल.एन. शास्त्री कृत द्रव्यगुण विज्ञान, डा. संजीव कुमार लाले कृत औषधि नाम रुप विज्ञानम्, ठाकुर बलवन्त सिंह कृत ग्लाशरी आफ वेजीटेबल ड्रग्स इन वृहत्रयी, मैं इन सभी पुस्तकों का और इनके विद्वान लेखकों का आभारी रहूँगा।

द्रव्यगुण विज्ञान द्वितीय प्रश्नपत्र की अनेकों पाठ्यपुस्तक उपलब्ध हैं किन्तु इस पुस्तक में एन.सी.आई. एस.एम. के नवीन पाठ्यक्रमानुसार निर्धारित सभी द्रव्यों का वर्णन आयुर्वेदीय एवं आधुनिक सिद्धान्तों का यथासंभव सामंजस्य बिठाते हुए किया गया है। इस तरह इस पुस्तक को स्नातक स्तर के छात्रों के साथ स्नातकोत्तर छात्रों के लिए भी उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है।

''द्रव्यं हि विज्ञानीयात् नामरुप गुणैस्त्रिभिः'' आचार्य उपदेश के अनुसार द्रव्य के पहचान में उसके स्वरुप की मुख्य भूमिका होती है। औषध द्रव्य परिचय में उसके विभिन्न अंग प्रत्यंगों का सांगोपाङ्ग वर्णन करने पर भी चित्र के अभाव में अधूरापन लगता है, इसलिए पुस्तक में द्रव्य वर्णन के साथ-साथ एवं पुस्तक के अन्त में पाठ्यक्रमानुसार सभी द्रव्यों के रंगीन चित्र (प्रयोज्यांग सहित) दिये गये हैं।

इस पुस्तक के सहयोगी लेखक हमारे स्नातकोत्तर द्रव्यगुण विभाग के छात्र जो ईश्वर की असीम अनुकम्पा से अब सभी चिकित्साधिकारी के पद को सुसोभित कर रहे हैं, डा. दानिश अब्बाशी, डा. प्रियंका नामदेव, डा. मोनिका वर्मा एवं मेरे सहयोगी विभागीय शिक्षक डा. रामानन्द, प्रवक्ता द्रव्यगुण के सहयोग से मैं यह गुरुतर कार्य को सम्पन्न कर सका हूँ एतदर्थ मैं इन सबका आभारी हूँ। प्रो. के.एन. द्विवेदी पूर्व विभागाध्यक्ष द्रव्यगुण विभाग एवं संकायाध्यक्ष आयुर्वेद संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी उ.प्र. ने इस पुस्तक का प्राक्कथन लिखकर पुस्तक का गौरव बढ़ाया है एतदर्थ हम उनके भी हृदय से आभारी हैं।

मैं पुस्तक लेखन के अपने कर्तव्य में कहां तक सफल हुआ हूँ इसका निर्णय विवेकी छात्रों एवं सुधी पाठकों को करना है। पुस्तक लेखन का यह हमारा प्रथम प्रयास है। अत: त्रुटियों का होना स्वाभाविक है, आशा है पाठकगणों से विनम्र भाव से क्षमा प्रार्थी हूँ।

यदि मेरा यह प्रयास छात्रों एवं पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ तो मैं स्वयं को उपकृत समझूँगा तथा उनके सुझावों का स्वागत करूँगा।

इसके अतिरिक्त इस पुस्तक के प्रकाशक श्री अतुल कुमार गुप्ता जी, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी एवं राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय के परास्नातक द्रव्यगुण विभाग के छात्र डा. अंजली रानी, डा. मयूरी महन्ता, डा. राबिया खानम, डा. आकाश कुमार, डा. अम्बरीश सिंह, डा. नूपुर पाण्डेय, डा. भोलासिंह चौहान, डा. शुभम शान्डिल्य, डा. सानिका प्रसाद का भी पूरा सहयोग मिला। अत: मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

अन्त में अपने माता-पिता एवं गुरुजनों शीर्ष द्रव्यगुण विद्वानों विशेषत: प्रो. आर.बी. यादव (विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर द्रव्यगुण विभाग, राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, लखनऊ) प्रो. केदारनाथ यादव, प्रो. भुवाल राम, प्रो. विनोद कुमार जोशी, डा. आनन्द कुमार चौरसिया, प्रो. अजय कुमार अग्रवाल, डा. पुनीत मिश्रा, डा. हरिशंकर मिश्रा, प्रो. रमाशंकर पाल, डा. राजीव कुशवाहा, डा. अखिलेश कुमार, डा. साधना शाक्य, डा. अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, डा. राममिलन, डा. सुमन अग्रवाल, डा. रिंकी जाटव, डा. अजय तिवारी का अभिनन्दन कर अपना निवेदन समाप्त करते हैं जिनके प्रयासों ने हमें इस योग्य बनाया कि हम ऐसा कार्य कर सकें।

प्रो. माखन लाल

डा. रामानन्द

♦❖♦

विषय सूची

1	भेषजावचारणा विधि	01-07
2.2	Dravya (Drugs) Nama-Guna-Karma-Jnana	08-228

	Page No.		Page No.
1. Amalaki	08	31. Kantakari	129
2. Aragwadha	12	32. Kapikachhu	133
3. Arjuna	16	33. Karkatshrungi	137
4. Ashoka	20	34. Katuki	140
5. Ashwagandha	23	35. Khadira	144
6. Ativisha	26	36. Kumari	148
7. Bala	30	37. Kutaja	152
8. Beejaka	34	38. Latakaranja	157
9. Bhallataka	38	39. Lodhra	159
10. Bharangi	43	40. Agnimanth	163
11. Bhrungaraja	47	41. Ahiphena (NK)	167
12. Bhumyamalaki	50	42. Ajamoda (DK)	171
13. Bilva	53	43. Apamarga (DK)	174
14. Brahmi	57	44. Asthishrunkhala	178
15. Chandana	61	45. Bakuchi	180
16. Chitraka	65	46. Bruhati	183
17. Dadima	69	47. Chakramarda	187
18. Dhataki	73	48. Dhanyaka	190
19. Dhamasa	76	49. Ela	193
20. Eranda	79	50. Gambhari	197
21. Gokshura	84	51. Japa	201
22. Guduchi	88	52. Jatiphala	203
23. Guggulu	94	53. Jeeraka (DK)	206
24. Haridra	99	54. Kalamegha	210
25. Haritaki	103	55. Kampillaka	213
26. Hingu	110	56. Kulatha (NK)	216
27. Jambu	114	57. Kumkum	219
28. Jatamansi	118	58. Lajjalu	223
29. Jyotishmati	122	59. Lavanga	226
30. Kanchanara	125		

2.2 Dravya (Drugs) Nama-Guna-Karma-Jnana 229-374

	Page No.		Page No.
1. Madanphala	229	20. Sariva	301
2. Mandukaparni	233	21. Shallaki	305
3. Manjishta	236	22. Shalmali (Mocharasa)	308
4. Maricha	240	23. Shankhapushpi	312
5. Meshashrungi	244	24. Shatavari	316
6. Methika	247	25. Shigru	320
7. Musta	250	26. Shunthi	324
8. Nagkeshar	254	27. Talisapatra (NK)	329
9. Nimba	258	28. Trivrut	332
10. Nirgundi	262	29. Tulasi	336
11. Palasha	266	30. Twak	340
12. Pashanabheda	270	31. Usheera	344
13. Patha	274	32. Vacha	347
14. Pippali	277	33. Varuna	351
15. Punarnava	282	34. Vasa	354
16. Rasna	286	35. Vatsanabha	358
17. Rasona	290	36. Vibhitaki	363
18. Sarapagandha	294	37. Vidanga	367
19. Sairayak	298	38. Yashtimadhu	371

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Question) 375-456

अनुक्रमणिका 457-475

Index 476-480

Coloured Photograph 481-504

♦❖♦

1 भेषजावचारणा विधि

चिकित्सक को किसी भी रोगी के रोग की चिकित्सा करने के लिए औषध प्रयोग विधि (भेषजावचारणा) का ज्ञान महत्त्वपूर्ण है। अ.सं.सू.-२३ 'भेषजावचारणीयाध्याय' में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। इस अध्याय में भेषज प्रयोग से सम्बंधित सभी विषयों का यथोचित विचार किया गया है। जैसे- रोगी परीक्षा, दोष परीक्षा, देह परीक्षा, औषध परीक्षा, भेषज सेवन काल आदि। किसी भी योग्य चिकित्सक के लिए इन सभी विषयों का ज्ञान अत्यावश्यक है।

आतुर परीक्षा

भेषजमवचारयन् प्रागेव तावदेवमातुरं परीक्षेत। कस्मिन्नयं देशे जातः संवृद्धो व्याधितो वा। कस्मिंश्च देशे मनुष्याणामिदमाहारजातमिदं विहारजातमेतावद्बलमेवंविधं सत्त्वमेवंविधत सात्म्यमियं भक्तिरिमे व्याधयो हिमिदमहितमिदमिति। प्राग्ग्रहणेन केन वा निदानविशेषणास्य कुपितो दोषो। दोषस्य ह्येकस्यापि बहवः प्रकोपे हेतवः। तस्माद्यथास्वलक्षणैः कर्मभिश्च बुद्ध्वाभिषक् दोषमेवमवगमयेत् । तद्यथा- किमाहारेण कुपितो वायुः किं विहारेण तथा रूक्षेण शिशिरोण वा साहसेन वेगरोधेन वा भयेन शोकेन वेति। ततश्च तत्प्रतिपक्षमेवौषधं प्रयुज्यमानमाशु सिद्धये सम्पद्यते । तत्र मधुराम्ललवणा रसाः कटुतिक्तकषायाश्चेतरेतरप्रतिपक्षाः। तदनन्तरं चोपलभेत । मृदुमध्यातिमात्रविकल्पनया कथं निदानमासेवितम् । एकरूपस्यापि हि हेतोर्मृद्वादिविभागेन पृथक्समवेतानां च दोषणामंशांशबलविकल्पविशेषाद्व्याधेर्बलाबलविशेषः। तत्रानेकदोषात्मकेषु व्याधिष्वनेकरसेषु च भेषजेषु रसदोषप्रभावमेकैकशोऽभिसमीक्ष्य व्याधिभेषजप्रभावतत्त्वं व्यवस्येत । न त्वेवं सर्वत्र। न हि विषमविकृतिसमवेतानां नानात्मकानां परस्परेणोपगृहीतानामुपहतानां चान्यैश्च विकल्पनैर्विकल्पितानामवयवप्रभावानुमानेन समुदायप्रभावतत्त्वमध्यवसितुं शक्यम् । तथाविधे हि समुदाये समुदायप्रबहावमेबोपलभ्य व्याध्यौषधप्रभावतत्त्वमवगच्छेत् ।। (अ.सं.सू. २३/३)

भेषज प्रयोग करने से पूर्व आतुर की परीक्षा करनी चाहिए। यह आतुर किस देश में जन्मा है, किस देश में पला-बढ़ा है और किस देश में रोगी हुआ है। उस देश में मनुष्यों का आहार एवं बिहार इस प्रकार का है, इस प्रकार का बल है, इस प्रकार का सत्त्व है, इस प्रकार की साम्यता है, इस प्रकार की रूचि है, इस प्रकार की व्याधियाँ इस देश में होती हैं, उस देश के मनुष्यों के लिए यह हितकर है और यह अहितकर है, किस प्रकार के निदान विशेष से दोष प्रकुपित हुए हैं; क्योंकि एक दोष के प्रकोप में भी अनेक हेतु होते हैं, इसलिए जिस प्रकार के उनके लक्षण एवं उनके कर्म हैं उनका ज्ञान करके ही चिकित्सक को दोष का निश्चय करना चाहिए। यथा- किस प्रकार के आहार एवं विहार से वायु प्रकुपित है, रूक्ष, लघु एवं शीत आहार, साहस, वेगावरोध, भय अथवा शोक से वायु कुपित हुई है और इसके पश्चात् दोष प्रकुपित होने का कारण जानकर तद् विपरीत औषध के प्रयोग से शीघ्र ही चिकित्सा में सिद्धि प्राप्त होती है। मधुराम्ललवण रस एवं कटुतिक्तकषाय रस परस्पर एक दूसरे के विपरीत है, इसके बाद यह विचार करना चाहिए कि आतुर के रोग का कारण मृदु, मध्य, अतिमात्रा भेद से कौन-सा निदान सेवन किया है क्योंकि एक समान हेतु होते हुए भी मृदु आदि भेद से अलग-अलग, मिश्रित रूप से दोषों के अंशांश बल भेद की विशेषता से व्याधि के बलाबल का निर्णय हो जाता है। अनेक दोष वाली व्याधियों में एवं अनेक रस वाली औषधियों में, एक-एक रस और एक-एक दोष

के प्रभाव को जानकर रोग एवं औषधि के प्रभाव का निश्चय करना चाहिए ऐसा सभी जगह नहीं पाया जाता क्योंकि विकृत रुप से मिले हुए एवं विषम रूप से मिले हुए अनेक प्रकार से आपस में उपघात को प्राप्त विभिन्न प्रकार से भेदों से विभेदित रस एवं दोषों के अवयवों के ज्ञान के आधार पर अनुमान द्वारा समुदाय के प्रभाव का निश्चय करना सम्भव नहीं है। इस प्रकार के समुदाय में समुदाय के प्रभाव को जानकरके व्याधि एवं औषध के प्रभाव का ज्ञान निश्चित करना चाहिए।

दोष के स्थान विशेष से औषध विशेष का ज्ञान

तथा कस्य धामाधिष्ठाय व्याधिरयमबस्थित इति निरूपयेत् । प्रविसृतो हि दोषः स्वमेव स्थानमातङ्कायाधितिष्ठन् मूर्धादीन्वा दुस्तरो भवति। ततश्च स्थानविशेषेण भेषजविशेषः पर्येषितव्यः ।। (अ.सं.सू. २३/४)

ततश्चैवमालोचयेत्–कस्यायमौषधस्य व्याधिरातुरो वा योग्यः कियतो वा दोषानुरूपो हि भैषज्यवीर्यप्रमाणविकल्पो व्याधिव्याधितबलापेक्षो भवति ।। (अ.सं.सू. २३/५)

सहसाऽतिबलानि संशोधनौषधान्यग्नेयवायव्ययतिसौम्यान्यतिमात्राणि वा तथाऽग्निक्षारशस्त्रकर्माण्यल्पसत्तवमातुर-मल्पबलं वाऽतिपातयेयुः। संशमनानि तु व्याधिबलादधिकानि तमुपशमय्य व्याधिं वायधिक्षपितदेहे शीघ्रमन्यमावहन्ति। शरीरबलादधिकानि ग्लानिमूर्च्छामदमोहबलक्षयान् । अग्निबलादधिकानि ग्लानिमग्निसादं च ।। (अ.सं.सू. २३/६)

यह भी निर्णय करना चाहिए कि व्याधि किस दोष के स्थान को अधिष्ठान बनाकर स्थित है क्योंकि प्रसरित हुए दोष अपने ही स्थान पर व्याधि के रूप में रहते हुए अथवा मूर्धा आदि के आश्रित होकर और कष्टकारी हो जाते हैं इसलिए स्थान विशेष को ध्यान में रखकर औषध विशेष का निर्णय करना चाहिए। क्योंकि जो औषध एक स्थान विशेष में हितकर है वही औषध उसी दोष वाले अन्य स्थान में हितकर नहीं होती है।

संशोधन औषधियाँ दो प्रकार की- १. तीक्ष्ण, २. सौम्य।

इनमें से तीक्ष्ण संशोधन औषधियाँ अग्नि एवं वायु महाभूत प्रधान होती हैं तथा सौम्य औषधियाँ पृथ्वी, जल एवं आकाश महाभूत प्रधान होती हैं। तीक्ष्ण औषधियाँ अथवा अग्निकर्म, क्षारकर्म एवं शस्त्रकर्म सहसा अति-मात्रा में प्रयोग करने पर अल्प सत्त्व एवं अल्प बल वाले रोगी के लिए प्राण भय उत्पन्न करती हैं। संशमन औषधियाँ भी व्याधि बल से अधिक शक्तिशाली होने पर व्याधि को शमित करके, व्याधि से दुर्बल शरीर में अन्य व्याधि को उत्पन्न करती हैं। शरीर बल से अधिक शक्तिशाली औषध का प्रयोग ग्लानि, मूर्च्छा, मद, मोह और बलक्षय को उत्पन्न कर देती है। अग्नि, बल से अधिक बल वाली औषध का प्रयोग रोगी में ग्लानि और अग्निमांद्य उत्पन्न करती है।

आतुर बलाबल परीक्षा

अपि च- अतिस्थूलोऽतिकृशो दुर्बलो दुर्बद्धमांसशोणितास्थ्यङ्गावयवोऽल्पाग्निरल्पाहारोऽसात्म्याहारोऽपचितः साररहितो वा व्याधिबलमेव तावदसमर्थः सोढुं किं पुनस्तथाविधोभेषजमेवं वेगम् । तस्मात्तादृशशमविषादकरैर्मृदुसुखैरुत्तरोत्त-रगुरुभिरविभ्रविभ्रमैश्चोपाचरेदौषधैर्विशेषादबलाः। ताह्यनवस्थितमृदुविक्लवहृदयाः प्रायः सुकुमाराः परं संस्तभ्याश्च।

ततोऽपि विशेषेण शिशवः। तथा बलवति व्याध्यातुरेऽल्पबलमल्पं वा भेषजमकिञ्चित्करं भूय एव दोषमुत्क्लेश्य व्याधिमुदीरयेत् ।। (अ.सं.सू. २३/७)

अतिस्थूल, अतिकृश, दुर्बल, शिथिल माँस शोणितास्थि अंगावयव वाले, मन्दाग्नि, अल्पाहारी, अपथ्य सेवन

करने वाले, जिनका शरीर पुष्ट न हो अथवा साररहित हो ऐसे रोगी व्याधि के बल को सहने में असमर्थ होते हैं, तो ऐसे रोगी औषधि के वेग को सहन करने में कैसे समर्थ होंगे? इसलिए अतिस्थूलादि रोगियों का उपचार विषाद न उत्पन्न करने वाली, मृदु वीर्य, सुखकारी, उत्तरोत्तर गुरु, विभ्रम न उत्पन्न करने वाली (दोषों को कुपित न करने वाली) औषधियों द्वारा करना चाहिए। विशेष रूप से स्त्रियों में उपर्युक्त व्यवस्था का पालन करना चाहिए क्योंकि स्त्रियाँ अस्थिर, मृदु, भीरु हृदय वाली, सुकुमार, दूसरों पर आश्रित होती हैं। स्त्रियों से भी विशेष सुकुमार शिशु होते हैं अत: शिशुओं में इस चिकित्सा क्रम का विशेष ध्यान देना चाहिए। इसी प्रकार बलवान आतुर एवं बलवान रोग में अल्पवीर्य वाले अथवा अल्प मात्रा में प्रयोग की गई औषधि कुछ भी कार्य न करके अत्यधिक मात्रा में दोषों को प्रकुपित कर व्याधि को बढ़ा देती है।

औषध परीक्षा

योग्यमपि चौषधमेवं परीक्षेत-इदमेवं रसवीर्यविपाकमेवं गुणमेवं द्रव्यमेवं कर्मैवं प्रभावमस्मिन्देशे जातमस्तिनृतावेवं गृहीतमेवं निहितमेवं विहितमेवं निषिद्धमेवमुपसंस्कृतमेवं संयुक्तमेवं युक्तमनया मात्रयैवंविधस्य पुरुषस्यैवंविधे काल एतावन्तं दोषमपकर्षत्युपशमयति वा। अन्यदपि चैवंविधं भेषजमभूत् । तथा तेनानेव वा विशेषेण प्रयुक्तमिदमकरोत् । सूक्ष्माणि हि दोषौषधदूष्यदेशकालबलानलाहारसारसात्म्यसत्त्वप्रकृतिवयसामवस्थान्तराणि यान्यनालोचितानि निहन्युरारतुरम् । आलोच्य-मानानि तु विपुलबुद्धिमपि चिकित्सकमाकुलीकुर्युः किं पुनरल्पबुद्धिम् । तस्मादभीक्ष्णशः शास्त्रार्थकर्मानुशीलनेन संस्कुर्वीत प्रज्ञाम् । अपि च–सन्ति व्याधयो ये शास्त्र उत्सर्गापवादैरुपक्रमं प्रति निर्दिष्टाः। तत्र प्राज्ञ एव दोषादिगुरुलाघवेन सम्यगध्य-वस्येदन्यतरनिष्ठायाम् ।। (अ.सं.सू. २३/८)

इस प्रकार योग्य औषध की परीक्षा करनी चाहिए- यह औषध इस प्रकार के रस, वीर्य एवं विपाक वाली है, इस प्रकार के गुणों वाली है, इस प्रकार का द्रव्य है एवं इसका इस प्रकार का कर्म है, इस प्रकार के प्रभाव वाली, इस देश एवं इस ऋतु में उत्पन्न है इस प्रकार से गृहित है एवं इस प्रकार से रखी गई एवं इस प्रकार से प्रयोग करना चाहिए एवं इस प्रकार से इसका प्रयोग निषिद्ध है, इस प्रकार की व्याधि में, इस मात्रा में और इस काल में प्रयोग करने पर, इस प्रकार के पुरुषों में प्रयोग करने पर उन दोषों का अपकर्षण या उपशमन करती है। इसी प्रकार की और भी औषधियाँ थी जो इस प्रकार प्रयोग करने पर, इसी प्रकार का परिणाम दर्शायी, क्योंकि दोष, भेषज, दूष्य, देश, काल, बल, शरीर, अग्नि, आहार, सार, सात्म्य, सत्त्व, प्रकृति एवं वय की अवस्थाओं में सूक्ष्म अन्तर होता है, जिनका विचार न करने पर आतुर के प्राण का संकट उत्पन्न होता जाता है। इन अवस्थाओं का विचार करने पर भी विपुल बुद्धि वाले चिकित्सक को भी व्याकुल कर देती है। अल्प बुद्धि वाले के बारे में कहना ही क्या? इसलिए अत्यन्त सावधानीपूर्वक शास्त्र के विषय एवं चिकित्सा कर्मों को बार-बार अभ्यास द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ावें, इस प्रकार शास्त्रों में जिन व्याधियों की चिकित्सा सामान्य एवं विशेष रुप से निर्दिष्ट है उनमें विद्वान चिकित्सक को चाहिए कि दोष-दूष्य आदि गुरुता और लघुता के द्वारा व्याधि का निश्चय कर चिकित्सा करनी चाहिए।

संशोधन काल

कालश्च भेषजस्य योग्यतामादधाति । स तु क्षणलवमुहूर्तादिभेदेनातुरावस्थया च द्विधोक्त; प्राक्। अपि च- शीतोष्ण-वर्षलक्षणस्त्रिविधः कालः। तत्र शीतोष्णयोर्वृष्टिशीतयोश्चान्तरेण साधारणौ वसन्तजलदात्ययौ। ग्रीष्मवर्षकालयोस्तु प्रारम्भो वृष्टेः प्रावृडिति विकल्प्यते । प्राक् तत्र शीतोष्णवर्षलक्षणा ऋतवस्त्रयो हेमन्तग्रीष्मवर्षाख्यास्तेषामन्तरे संशोधनार्थं साधारणा

2.1 Dravya (Drug)
Nama-Guna-Karma Jnana

१. आमलकी (ĀMALKĪ)

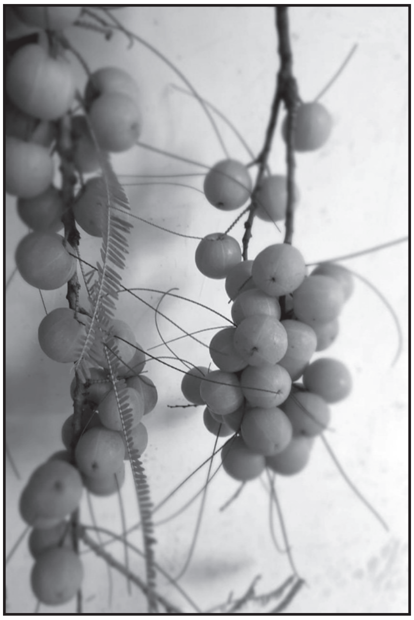

आमलते धारयति शरीरम् वा रसायनगुणान्- शरीर का धारण करे एवं रसायन गुण युक्त।

B.N.- **Emblica officinalis Gaerth., Syn. Phyllanthus emblica Linn.**

Emblica- Old generic name from Sanskrit 'Amlika' and 'Aamalaki'

Offiicinalis- Medicinal;

Family- Euphorbiaceae

क्षेत्रीय नाम (Regional Name)

संस्कृत - आमलकी	**हिन्दी** - आँवला
उड़िया - औंला	**असमिया** - आमलुकी
कन्नड़ - नेल्लि	**गुजराती** - आमला
बंगाली - आमला	**पंजाबी** - आमला
मराठी - आँवले	**English** - Indian gooseberry

पर्याय (Synonyms)

कोलम् (कै.नि.)- कोल प्रमाण फल।	
तिष्यफला (भा.प्र.)- पौष मास में उत्पन्न फल।	
अमृतफलम् (भा.प्र.)- अमृत समान रसायन गुणयुक्त फल।	
धात्री (भा.प्र.)- स्तन्य के समान धातुओं का पोषण।	
वृष्या (भा.प्र.)- शुक्रधातुवर्धक।	
वयस्था (भा.प्र.)- दीर्घ आयु प्रदान करने वाला।	
कोरङ्गका (अ.नि.)- कोरङ्ग देश में उत्पन्न।	
वृत्तफला (रा.नि.)- वृत्ताकार फल।	
अमृता (भा.प्र.)- अमृत समान गुणकारी।	
जातीफलरसम् (भा.प्र.)- फल का स्वरस औषधीय गुण युक्त।	
शिवम् (भा.प्र.)- कल्याणकारी।	
शीतफलम् (सो.नि.)- फल शीतवीर्य।	
वयस्था (ध.नि.)- युवावस्था को स्थापित करे।	

वर्गीकरण (Classification of Dravya)

चरक - कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न, कासहर, वय:स्थापन, विरेचनोपग महाकषाय।	
सुश्रुत - आमलक्यादि, परुषकादि, त्रिफला गण।	
भा.प्र. - हरीतक्यादि वर्ग।	

उत्पत्तिस्थान (Habitat)- सर्वत्र भारत।

वानस्पतिक स्वरूप (Morphology)- इसका मध्यमाकार २०-२५ फीट ऊँचा पर्णपाती वृक्ष होता है। पत्र-पक्षवत्, इमलीपत्र सदृश १-१३ सेमी. लम्बे एवं सरल होते हैं। पुष्प-पतझड़ के पश्चात् बसन्त ऋतु में, शाखाओं में हरित-पीत वर्ण के बहुत छोटे-छोटे, गुच्छों में लगते हैं। फल-गोलाकार पीताभ हरित जिसके बाह्य पृष्ठ पर छ: रेखायें होती है। इसका पुष्पकाल मार्च से जून एवं फलकाल नवम्बर से मार्च तक होता है। वृक्ष को 'आमलकी' एवं फल को 'आमलक' कहते हैं।

जातियाँ (Varieties)

A) **राज निघण्टु (आम्रादि वर्ग-१६०-१६१)–** १. आमलक, २. क्षुद्रामलक

B) **१. वन्य–** चिकित्सीय प्रयोग हेतु श्रेष्ठ।

२. ग्राम्य– पोषक तत्त्व अधिक, रसायनार्थ श्रेष्ठ।

* आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उ.प्र. द्वारा Krishna NA5, Amrit NA6, Neelam NA7, Kanchan नामक जातियाँ विकसित की गई हैं।

* च.सं.सू.-२७/१४६- में एक अन्य द्रव्य प्राचीनामलक (Flacourtia jangomas [Lour] Raeusch) का उल्लेख आया है। आमलकी से केवल नाम की समानता है बाकी इस द्रव्य का आमलकी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

रासायनिक संगठन (Chemical Composition)

फल में Gallic acid, Ellagic acid, Ascorbic acid, Aspartic acid, Tannins, Calcium, Phosphours, Protein, Fats, Iron etc. पाया जाता है। प्रो. घोषाल (BHU) के अनुसार आमलक में Vit-C के स्थान पर Gallo-ellagi-tannins or Emblicanins होते हैं।

रस पञ्चक (Rasa Panchaka)

रस - पंचरस (लवणरहित) अम्ल प्रधान	**गुण** - गुरू, रुक्ष
विपाक - मधुर	**वीर्य** - शीत
प्रभाव - रसायन	

दोषकर्म- त्रिदोषहर- अम्लरस के कारण वातहर, शीतवीर्य एवं मधुर विपाक के कारण पित्तहर, कषाय रस एवं रुक्ष गुण के कारण कफहर।

कर्म- रसायन, वृष्य, रक्तपित्तशामक, मृदुरेचक, ज्वरघ्न, प्रमेहघ्न, शोफघ्न, छर्दिघ्न, मेदोहर, मूत्रल, भग्न-संधानकर, रुच्य, केश्य, चक्षुष्य, कुष्ठघ्न। शुष्कफल-ग्राही, दीपन, रक्तस्रावरोधक है।

* **आमलकी वयःस्थापनानां।** (च.सू. २५/४०)

आमयिक प्रयोग (Therapeutic Administration)

१. आमलकी से निर्मित ब्रह्मरसायन एवं च्यवनप्राश अवलेह के सेवन से शरीर की सभी क्रियायें सुचारु होकर, शरीर की पुष्टि होती है। (च.चि. I- १/३३-५७ एवं १/६३-६९)
२. त्रिफला चूर्ण (आमलकी, हरीतकी, बिभीतकी) कफपित्तशामक, प्रमेह, कुष्ठ, विषमज्वर नाशक, सारक, चक्षुष्य, अग्निदीपक एवं रुचिकारक होता है। (भा.प्र.नि.-हरीतक्यादि वर्ग ४३)
३. आमलकी के स्वरस को घृत में भूनकर ज्वर में देते हैं। (च.चि. ३/२३०)
४. आमलकी स्वरस में पिप्पली चूर्ण और मधु मिलाकर हिक्का में देते हैं। (च.चि. १७/१३५)
५. आमलकी स्वरस में हरिद्रा चूर्ण एवं मधु मिलाकर प्रमेह में देते हैं। (च.चि. ६/२६)
६. आमलकी से सिद्ध जल का प्रयोग कामला में करते हैं। (च.चि. १६/११४)
७. आमलकी स्वरस में अधिक मात्रा में मधु एवं शर्करा मिलाकर विरेचन के लिए रक्तपित्त में प्रयोग करते हैं। (च.चि. ४/५८)
८. आमलकी चूर्ण मधु के साथ पाण्डु रोग में प्रयोग करते हैं। (सु.उ. ४४/२७)
९. आमलकी चूर्ण का क्षीरपाक घृत के साथ कास में प्रयोग करते हैं। (अ.हृ.चि. ३/७८)
१०. आमलकी एवं हरिद्रा का कषाय वातरक्त में अति उपयोगी है। (सु.चि. ५/१०)

प्रयोज्यांग (Useful Part)- फल।

मात्रा (Dose)- स्वरस- १०-२० मिली., चूर्ण- ३-६ ग्राम।

विशिष्ट योग (Important Formulations)

विशिष्ट योग	रोगाधिकार
१. ब्रह्मरसायन	रसायन
२. च्यवनप्राश	रसायन
३. त्रिफला चूर्ण	विबन्ध, प्रमेह, ज्वर
४. फलत्रिकादि क्वाथ	प्रमेह
५. आमलकी रसायन	रसायन
६. त्रिफला घृत	तिमिर
७. धात्री अवलेह	पाण्डु

Researches

1. Hypolipidemic efficacy of Amalaki (Gopa B, Bhatt, KG 2012 Mar; 44(2): 238-42)
2. Antimicrobial activity of aqueous extract of the fruit of Emblica officinalis (Kumar A 2011 Sep. 31(3): 246-50).
3. In Vitro Anti-oxidant study of Amalaki (BS Savadi Science 1(2), 3, 2022)

शास्त्रीय संदर्भ (Classical References)

१. **आमलकी वयः स्थापनानां।** (च.सू. २५/४०)

२. **मेहेषु धात्रीनिशे।** (अ.हृ.उ. ४०/४८)

३. **त्रिफला तिमिरघ्नानां ।** (अ.सं.सू. १३/३)

४. **अक्ष्यामयेषु त्रिफला ।** (अ.हृ.उ. ४०/५०)

५. **वयसः स्थापने धात्री** (अ.हृ.उ. ४०/५६)

६. **अम्लं समधुरं तिक्तं कषायं कटुकं सरम् । चक्षुष्यं सर्वदोषघ्नं वृष्यमामलकीफलम् ।।**
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यतः। कफं रूक्षकषायत्वात्फलेभ्योऽभ्यधिकं च तत् ।। (सु.सू. ४६/१४३-१४४)

७. **वयःस्थाऽऽमलकं वृष्यं जातीफलरसं शिवम् । धात्रीफलं श्रीफलं च तथाऽमृतफलं स्मृतम् ।।**
कषायं कटुतिक्ताम्लं स्वादु चामलकं हिमम् । सरं त्रिदोषहृद् वृष्यं ज्वरघ्नं च रसायनम् ।।
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पितं माधुर्यशैत्यतः। कफं रूक्षकषायत्वात्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित् ।। (ध.नि. गुडूच्यादि वर्ग २११-२१३)

८. **धात्रीफले श्रीफलं च तथामृतफलं शिवम् । वयःस्थामलकं वृष्यं जातीफलरसं तथा।।**
अमृतामंडकं शीतफलं वर्षफलं स्मृतम् । (सो.नि. गुडूच्यादि वर्ग- २३३-२३४)

९. **तद्वत् धात्री स्वेदमेदोहराम्ला शुक्रला हिमा । भग्नसंधानकृत् केश्या पिपासाकफपित्तहृत् ।।**
तन्मज्जा तुवरः स्वादुस्तट्छर्द्यनिलपित्तहा । हन्ति वातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्यशैत्यतः।।
कफं रूक्षकषायत्वात् फलेभ्योऽभ्यधिकं मतम् । चक्षुष्यं सर्वदोषघ्नं वृष्यमामलकीफलम् ।। (कै.नि. औषधि वर्ग २३८-२४०)

१०. **वयस्यामलकी वृष्या जातीफलरसं शिवम् । धात्रीफलं श्रीफलं च तथाऽमृतफलं स्मृतम् ।।**
त्रिष्वामलकमाख्यातं धात्री तिष्यफलाऽमृता ।। हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तु विशेषतः।
रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम् ।। हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यतः।
कफं रूक्षकषायत्वत्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित् ।। यस्य यस्य फलस्नेह वीर्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानपि निर्दिशेत् । (भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग- ३८-४१)

११. **कटुमधुरकषायं किञ्चिदम्लं कफघ्नम् रुचिकरमतिशीतं हन्ति पित्तास्रतापम् ।**
आमलकं कषायाम्लं मधुरं शिशिरं लघु। दाहपित्तवमीमेहशोफघ्नं च रसायनम्।। (रा.नि. औषधि वर्ग १५८-१५९)

■■■

२. आरग्वध (ĀRAGVADH)

आसमन्तात् रूजां वधति- सम्पूर्ण रूप से रोगनाशक।

B.N.- **Cassia fistula** Linn.

Cassia- Kasia (Greek)- Old name used for the plant
Fistula (Latin)– Tube; tubular.

Family- Fabaceae, Sub-family- Caesalpinoideae

क्षेत्रीय नाम (Regional Name)

संस्कृत - आरग्वध	**हिन्दी** - अमलतास
उड़िया - सुनारी	**असमिया** - सुनारु
गुजराती - गर्मालो	**बंगाली** - सोनाली
पंजाबी - अमलतास	**मराठी** - बाहवा
English - Purging Cassia	

पर्याय (Synonyms)

राजवृक्ष (भा.प्र.)- सुन्दर वृक्ष एवं सुकुमारों में मृदु विरेचन हेतु प्रयुक्त।

सुवर्णक (भा.प्र.)- इसके पुष्प सुवर्ण होने के कारण।

स्वर्णवृक्ष (सो.नि.)- पीत पुष्प से आच्छादित वृक्ष।

स्वर्णाङ्ग (भा.प्र.)- स्वर्ण समान पुष्प युक्त अंग।
स्वर्णभूषण (भा.प्र.)- स्वर्ण समान पुष्प युक्त अंग से सुशोभित।
दीर्घफल (भा.प्र.)- दीर्घफल होने से ।
चतुरङ्गुल (भा.प्र.)- फल के पर्व की दूरी का प्रमाण चार अंगुल।
कृतमाल (भा.प्र.)- पुष्प मञ्जरी माला समान।
आरेवत (भा.प्र.)- मलों को निकालने वाला।
शम्पाक (भा.प्र.)- पाचन क्रिया को सुचारु करें।
व्याधिघात (भा.प्र.)- रोगनाशक।
आरोग्यशिम्बी (कै.नि.)- फल सेवन से आरोग्य प्राप्ति।
कुष्ठसूदन (रा.नि.)- कुष्ठनाशक।

वर्गीकरण (Classification of Dravya)

चरक	- कुष्ठघ्न, कण्डूघ्न महाकषाय, तिक्तस्कन्ध।
सुश्रुत	- आरग्वधादि, श्यामादि गण, अधोभागहर।
भा.प्र.	- हरीतक्यादि वर्ग।

उत्पत्ति स्थान (Habitat)- समस्त भारत।

वानस्पतिक स्वरूप (Morphology)- इसका मध्यम आकार का २५-५० फीट ऊँचा पर्णपाती वृक्ष होता है। पत्र-संयुक्त, एकान्तर वृन्तयुक्त ४-८ जोड़ी अण्डाकार पत्रक युक्त होते हैं। पुष्पक्रम- Raceme होता है तथा पत्ते झड़ जाने पर प्राय: वैशाख या ज्येष्ठ मास में पीत पुष्पों की माला से सम्पूर्ण वृक्ष स्वर्ण आभूषण समान सुन्दर दिखाई देता है। इसकी फली १-२ फीट लम्बी १ इंच व्यास की बेलनाकार, अपक्वावस्था में हरितवर्ण की तथा पक्वावस्था में कृष्णाभ भूरे वर्ण की होती है। इसमें २५-१०० चपटे बीज होते है जो कृष्णाभ फलमज्जा से आवृत्त होते हैं। इसकी छाल 'सुमारी' नाम से चमड़ा रंगने के काम आती है।

जातियाँ (Varieties)

(A) **धनवन्तरि निघण्टु (गूडूच्यादि वर्ग-२१५-२१८)-** १. आरग्वध २. कर्णिकार

(B) **राज निघण्टु (प्रभद्रादि वर्ग-४२-४३)-** १. आरग्वध २. कर्णिकार

रासायनिक संगठन (Chemical Composition)

इसकी फल मज्जा में Hydroxy methyl anthraquinone, Glucose, Glutin, Pectin, Calcium oxalate, Pigments, water etc. इसकी पत्ती एवं छाल में Rhein glycosides मिलते हैं।

रस पञ्चक (Rasa Panchaka)

रस - मधुर, तिक्त (राज निघण्टु)	**गुण** - गुरु, मृदु, स्निग्ध
विपाक - मधुर	**वीर्य** - शीत

दोषकर्म- वातपित्तशामक एवं कफपित्त संशोधक।

मधुररस, स्निग्धगुण, मधुर विपाक के कारण वातशामक।

मधुररस, शीतवीर्य के कारण पित्तशामक, स्रंसन होने के कारण कफपित्त संशोधक।

कर्म- फलमज्जा-अनुलोमक, दाहशामक, शूलहर, कोष्ठशुद्धिकर, कृमिघ्न, प्रमेहघ्न, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न (विशेषत: Black water fever में)।

> * **ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम्** ।। (भा.प्र.नि.ह.वर्ग- १५०)

पत्र-मेदविशोषक, विरेचक होते हैं।

आमयिक प्रयोग (Therapeutic Administration)

१. कुष्ठ में सर्षप तैल के अभ्यङ्ग के पश्चात् आरग्वध, काकमाची एवं कनेर के समभाग पत्र कल्क का प्रयोग उद्वर्तन के रूप में करते हैं। (च.सू. ३/१७)

२. ज्वर में आरग्वध फलमज्जा का दूध के साथ पान करते हैं। (च.चि. ३/२३२)

३. आरग्वधादि कषाय का प्रयोग हारिद्र मेह नाशक है। (सु.चि. ११/९)

४. अमलताश की पत्ती एवं सप्तपर्ण की छाल का क्वाथ बनाकर कुष्ठ में प्रयोग करते हैं। (च.चि. ७/९७)

५. कुष्ठ में आरग्वध मूलत्वक् से सिद्ध घृत का खदिर क्वाथ से पान करते हैं। (अ.हृ.चि. १९/१३)

६. आरग्वध पत्र को सर्षप तैल में भूनकर सायंकाल भोजन पश्चात् चबाने से आमवात का नाश होता है। (भा. प्र.चि. २६/५२)

प्रयोज्यांग (Useful Parts)- फलमज्जा, मूलत्वक्, पत्र, पुष्प।

मात्रा- फलमज्जा- ५-१० ग्राम, (विरेचनार्थ-१०-२० ग्राम), मूलत्वक् क्वाथ- ५०-१०० मिली., पुष्पकल्क- ५-१० ग्राम।

* क्वाथ करने से फलमज्जा की शक्ति कम हो जाती है। अत: इसका प्रयोग हिम या फाण्ट के रुप में करना चाहिए। फल को एक सप्ताह बालू में दबाकर रखने के बाद सुखाकर मज्जा निकालते हैं।

विशिष्ट योग (Important Formulations)

विशिष्ट योग	रोगाधिकार
१. आरग्वधादिध तैल	श्वित्र
२. आरग्वध क्वाथ	कुष्ठ

३. रास्नासप्तक तैल	वातव्याधि
४. महामरिच्यादि तैल	कुष्ठ
५. आरग्वधादि कषाय	कामला, रक्तपित्त

Researches

1. Antibacterial and antifungal activity of Cassia fistula leaves (Bhalodia, Shukla, 2011 Apr; 2(2): 104-9)
2. Anticandidal activity of Cassia fistula (Irshad Shreaz, Rizvi 2011 Jul; 49 (7) 727-33)
3. Cardioprotective activity of Cassia fistula (Ajay Singh Kushwaha, Manish 2022-hindawi.com)

शास्त्रीय संदर्भ (Classical References)

१. **चातुरङ्गुलो मृदुविरेचनानाम् ।** (च.सू. २५/४०)

२. **ज्वरहृद्रोगवातासृगुदावर्त्तादिरोगिषु। राजवृक्षोऽधिकं पथ्यो मृदुर्मधुरशीतलः।।**
बाले वृद्धे क्षते क्षीणे सुकुमारे च मानवे। योज्यो मृद्वनपायित्वाद्विशेषाच्चतुरङ्गुलः।। (च.क. ८/४-५)

३. **आरग्वधोगुरुः स्वादुः शीतलः स्रंसनोत्तमः। ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ।।**
तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम् । ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ।। (भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग १५०)

४. **कर्णिकारो राजवृक्षः प्रग्रहः कृतमालकः। आरोग्यशिम्बी शम्पाको व्याधिघातो व्यथान्तकः।।**
कृतमालो लघुः शीतः पित्तिघ्नो मधुरः सरः। तत्फलं मधुरं बल्यं वातपित्तमजित्सरम् ।। (ध.नि. गुडूच्यादि वर्ग २१७-२१८)

५. **आरग्वधो दीर्घफल आमहा चतुरंगुलः। आरेवतस्थता पर्णी स्वर्णस्थाली च रैवतः।।**
कुण्डली हेमपुष्पश्च करिव्याधो ज्वरापहः। स्वर्णशेफालिका कोकः स्वर्णवृक्षो द्रुमोत्पलः।। (सो.नि. गुडूच्यादि वर्ग २३७)

६. **आरग्वधो हिमस्तिक्तो मधुरो मृदुरेचनः। गुरुर्दोषहरो ज्वरगुल्मोदरापहः।।**
शूलोदावर्तहृद्रोगव्रणकच्छूप्रमेहनुत् । पत्रमारग्वधस्यापि कफमेदोविशोषणम् ।।
विरेके सततं पथ्यं मलदोषसमन्विते। कुसुमं शिशिरं स्वादु कषायं ग्राहि तिक्तकम् ।।
तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम् । ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ।।
तन्मज्जा स्वादुपाकेऽग्निकृत् स्निग्धोऽनिलपित्तहा। (कै.नि. औषधि वर्ग ९४४-९४७)

७. **आरग्वधो दीर्घफलो व्याधिहा चतुरङ्गुलः। आरेवतस्तथा कर्णी कर्णिकारोऽथ रेचनः।।**
आरग्वधो रसे तिक्तो गुह्रष्णः कृमिशूलनुत् । कफोदरमेहघ्नः कृच्छ्रगुल्मत्रिदोषजित् ।। (ध.नि. गुडूच्यादि वर्ग २१५-२१८)

८. **आरग्वधोऽतिमधुरः शीतः शूलापहारकः। ज्वरकण्डूकुष्ठमेहकफविष्टम्भनाशनः।।** (रा.नि. प्रभद्रादि वर्ग ४७)
कर्णिकारो रसे तिक्तः कटूष्णः कफशूलहृत् । उदरकृमिमेहघ्नो व्रणगुल्मनिवारणः।। (रा.नि. प्रभद्रादि वर्ग ४३)

४. अशोक (ASHOK)

अशोकः न शोकोऽस्मात्- इसके सेवन से शोक (रोग) दूर हो जाता है।

B.N.- **Saraca indica Linn., Syn. Saraca asoca (Roxb.) De. Wilde**

Saraca- Brazilion name of the plant in honour of Dr. Sarasin, he is a French physician

indica- of India

asoca- Ashoka (Sanskrit)- Happiness

Family- Fabaceae Sub-family- Caeselpinoideae

क्षेत्रीय नाम (Regional Name)

संस्कृत - अशोक	**हिन्दी** - अशोक
उड़िया - ओशोको	**बंगाली** - असोक
गुजराती - अशोक	**पंजाबी** - असोक
मराठी - जसुन्दी	**English** - Sorrowless tree

पर्याय (Synonyms)

हेमपुष्प (भा.प्र.)- स्वर्णवर्ण पुष्प वाला।
पिण्ड पुष्प (भा.प्र.)- पुष्प का आकार पिण्डवत् ।
कङ्केलि (भा.प्र.)- कङ्क नामक यम के समान कृमि, विषनाशक।

७. बला (BALA)

बलति बलयति वा 'बल प्राणने'- बल्य-प्राणशक्तिवर्धक, एवं स्वतः दृढ़ होने से बला कहलाती है।

B.N.- **Sida cordifolia Linn.**
Sida- Greek name of the plant
Cordifolia- cord (Latin)- The heart
folium (latin) - A leaf

Family- Malvaceae

क्षेत्रीय नाम (Regional Name)

संस्कृत - बला	**हिन्दी** - बरियार
उड़िया - बड़ीयानान्ला	**बंगाली** - बरीला
गुजराती - बलदाणा	**पंजाबी** - खरैष्ठी
मराठी - चिकणा	**English** - Country mallow

पर्याय (Synonyms)

वाट्या (भा.प्र.)- काण्ड दृढ़, सूत्र युक्त।
खरयष्टिका (ध.नि.)- काण्ड खर स्पर्श युक्त।
बलिनी (शा.नि.)- बलवर्द्धक।
भद्रौदनी (अ.नि.)- बीज ओदन बनाने हेतु अन्न की तरह।
वाट्यालका (भा.प्र.)- चारागाहों एवं मैदानी क्षेत्रों में उत्पन्न।

2.2 Dravya (Drug)
Nama-Guna-Karma Jnana

६०. मदनफल (MADANPHAL)

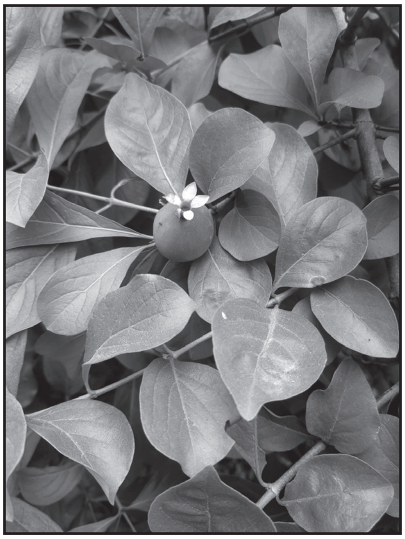

मदयति रोमहर्षं ग्लानिश्च जनयतीति।- रोमहर्ष एवं ग्लानि उत्पन्न करने से इसे मदनफल कहते हैं।

B.N.- **Randia dumetorum (Retz.) Poir. Syn. Randia spinosa**
Randia- In honour of I. Rand. a London Botanist
dumetorum- dumus (Latin)- A thorn, bush
dumetum (Latin)-A thicket

Family- Rubiaceae

क्षेत्रीय नाम (Regional Names)

संस्कृत - मदन	**हिन्दी** - मैनफल
बंगाली - मयनफल	**गुजराती** - मींढ़ल
मराठी - गेलफल	**English** - Emetic Nut

पर्याय (Synonyms)

पिण्ड (भा.प्र.)- पिण्डी या वर्तुलाकार फल।
करहाट (भा.प्र.)- कण्टकयुक्त होने से स्पर्श में दुखदायी।

शल्यक (भा.प्र.)- वृक्ष कण्टक युक्त।
ग्रन्थिफल (रा.नि.)- फलों पर ग्रन्थि होती है।
घण्टाल (रा.नि.)- फल घण्टाकार।
श्वसन (च.स.)- कफ को निकालकर श्वास रोगों में हितकारी।
पिण्डितक (भा.प्र.)- पिण्डी या वर्तुलाकार फल।
मरुबक (भा.प्र.)- मरु प्रदेश में प्राप्त।
विषपुष्पक (रा.नि.)- पुष्प विषाक्त होने से।
गोलफल (रा.नि.)- फल गोलाकार।
राठ (च.स.)- श्रेष्ठ वामक द्रव्य।

वर्गीकरण (Classification of Dravya)

चरक - अस्थापनोपग, अनुवासनोपग महाकषाय।
सुश्रुत - आरग्वधादि, मुष्ककादि गण।
भा.प्र. - हरीतक्यादि वर्ग।

उत्पत्ति स्थान (Habitat)- समस्त भारत। विशेषत: उत्तरपूर्वी भारत।

वानस्पतिक स्वरुप (Morphology)- इसका १०-३० फीट ऊँचा छोटा कण्टकित वृक्षक या गुल्म होता है। पत्र-१-२ इंच लम्बे, गोलाकार/आयाताकार। पुष्प-श्वेत पीताभ तथा सुगंधित होते हैं। फल-गोल बड़ी सुपारी या अखरोट समान, हरे, पकने पर पीले हो जाते हैं। बीज- फलमज्जा के भीतर बड़ी एला के सदृश चार पिण्डों के रुप में बीज व्यवस्थित होते हैं जिन्हें 'फलपिप्पली' कहते हैं।

जातियाँ (Varieties)

(A) **कै.नि. औषधि वर्ग (९००-९०२) दो जातियाँ-** १. मदन (श्रेष्ठ वामक)
२. पिण्डीत भेद (वस्तिशोधक, मूत्रल)

(B) **रा. नि. शालमल्यादि वर्ग (६६-७०) दो जातियाँ-** १. मदन २. वाराह

रासायनिक संगठन (Chemical composition)- इसमें Sapponin, ursosapponin, essential oil, 6 saponins named as dumetoronin A B C D E & F, randiatic acid A and B, Valerianic acid, Triterpenete पाया जाता है।

रस पञ्चक (Rasa Panchaka)

रस - मधुर, तिक्त	**गुण** - लघु, रुक्ष
विपाक - कटु	**वीर्य** - उष्ण
प्रभाव - वामक	

दोषकर्म- कफवातशामक और पित्तसारक।
उष्ण वीर्य होने से वातशामक।
तिक्तरस, कटुविपाक, उष्णवीर्य होने से कफशामक।

कर्म- सर्वोत्तम वामक, ग्राही, कफनि:स्सारक, आर्तवजनन, लेखन, ज्वरघ्न, कुष्ठघ्न, विषघ्न, स्वेदल, रक्त-शोधक, शोथहर, व्रणशोधनरोपण

* **मदनफलं वमनास्थापनानुवासनोपयोगिनाम्** । (च.सू. २५/४०)
वमनद्रव्याणां मदनफलानि श्रेष्ठतमानि आचक्षतेऽनपायित्वात् । (च.क. १/१३)

आमयिक प्रयोग (Therapeutic Administration)

१. मदनफल का पिप्पली या मुलेठी के साथ ज्वर में वमनार्थ प्रयोग करते हैं। (च.चि. ३/२२८)

२. मदनफल के बीजों का चूर्ण काञ्जी में पीसकर नाभि पर लेप करने से शूल का नाश होता है। (वंगसेन. शूल. चि.-II)

३. मदनफल, गम्भारी फल, मुलेठी को समभाग लेकर पित्तज कास में वमनार्थ प्रयोग करते हैं। (च.चि. १८/८३)

प्रयोज्यांग (Useful part)- फल।

मात्रा (Dose)- फलमज्जाचूर्ण- 1-3 grams, फलपिप्पली चूर्ण (वमनार्थ)- 3-6 grams.
च.क. (१/१४)- वमनार्थ-फलपिप्पली चूर्ण अन्तर्नखमुष्टिप्रमाण।

संग्रहविधि- मदनफल को बसन्त और ग्रीष्म ऋतु के मध्य में पुष्य, अश्विनी अथवा मृगशिरा से युक्त मैत्र मुहूर्त में संग्रह करना चाहिए। जो मदनफल पके हो, मध्यम प्रमाण के, पाण्डु वर्ण के, कृमिरहित, जिनसे दुर्गन्ध न आती हो तथा जन्तुओं ने खाया न हो। ऐसे छोटे फल लेकर कुश की पोटली में बाँधकर ऊपर से गोमय लगाकर, जौ उड़द, शालिधान्यादि के भूसे में से, किसी एक में आठ दिन के लिए रखते हैं, तत्पश्चात् उसे निकालते हैं। तब यह मदनफल मृदु, मधुगंधि हो जाता है। इसको छाया में सुखा लें। सूखने पर इसके बीज निकाल लें। बीज को घृत, दधि, मधु या तिलकल्क मर्दन कर पुन: सुखा लें। सूखने के पश्चात् एक नवीन स्वच्छ घड़े में सुरक्षित रख दें। (च.क. १/१३)

विशिष्ट योग (Important Formulation)

विशिष्ट योग	रोगाधिकार
१. मदनादि लेप	शूल
२. मदनफल पिप्पली योग	ज्वर
३. च.क.-१ में बताये गये समस्त ११३ योग	

Researches

1. The present study was conducted to evaluate the protective effect of methanolic fruit extract of Randia dumetarum (L). on alcohol induced liver damage of rats. (2012 Apr; 16(2): 125-30)
2. Extracts of Randia dumetarum lank (SD) could inhibit pregnancy in 50-60% of rats. (Prakash AO, Saxena V, Shukla S. 1985 Nov.-Dec. 16(6):441-8.)

शास्त्रीय संदर्भ (Classical References)

१. **मदनफलं वमनास्थापनानुवासनोपयोगिनाम् ।** (च.सू. २५/४०)

२. **वमनद्रव्यणां मदनफलानि श्रेष्ठतमान्याचक्षते अनपायित्वात् । तानि वसन्तग्रीष्मयोरन्तरे पुष्या-श्वयुग्भ्यां मृगशिरसा वा गृह्णीयान्मैत्रे मुहूर्ते। यानि पक्वान्यकाणान्यहरितानि पाण्डून्यक्रिमीण्य-पूतीन्यजन्तुजग्धान्यह्रस्वानि; तानि प्रमृज्य, कुशपुटे बद्ध्वा, गोमयेनालिप्य, यवतुषमाषशालिकु-लुत्थमुद्गपलानामन्यतमे निदध्यादष्टरात्रम् । अतऊर्ध्वं मृदुभूतानि मध्विष्टगन्धान्युद्धृत्य शोषयेत् । सुशुष्काणां फलपिप्पलीरुद्धरेत् । तासां घृतदधिमधुपललविमृदितानां पुनः शुष्काणां नवं कलशं सप्रमृष्टवालुकमरजस्कमाकण्ठं पूरयित्वा स्ववच्छन्नं स्वनुगुप्तं शिक्येष्वासाज्य सम्यक् स्थापयेत् ।** (च.क. १/१३)

३. **मदनः करहाटश्च राङ्गः पिण्डीतकः फलम् ।। श्वसनश्चेति पर्यायैरुच्यते तस्य कल्पना ।** (च.क. १/२७)

४. **मदनं सर्वगदाविरोधि च। मधुरं सकषायतिक्तकं तदह्रक्षं सकटूष्णविज्जलम् । कफपित्तहृदाशुकारी चाप्यनपायं पवनानुलोमि च ।।** (चरक सिद्धि ११/१३-१४)

५. **मदनः शल्यको राङ्गः पिण्डी पिण्डीतकः फलः। गालवः करहाटश्च च्छर्दनो विषपुष्पकः।।**
मदनः कटुकस्तिक्तस्तथा चोष्णो व्रणापहः। श्लेष्मज्वरप्रतिश्यायगुल्मेषु विद्रधीषु च ।।
शौफदोषापहो वस्तौ वमने चेह शस्यते । (ध.नि. गुडूच्यादि वर्ग १६५-१६६)

६. **मदने शल्यको राङ्गः पिंडी पिंडीतकः फलः। तगरः करहाटश्च श्वसनो विषपुष्पकः ।।**
स्नेहपिंडातको गोलः कैडर्यो वामनस्तथा । (सो.नि. गुडूच्यादि वर्ग २१०-२११)

७. **मदनो गालवो गालः पिण्डी पिण्डीतकः फलम् । सस्यकः श्वसनो राङ्गश्छर्दनो विषपुष्पकः।।**
करहाटो मरुवको मातुलो बीजपुष्पकः। मदनो मधुरस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः।।
ह्रक्षो लघुः प्रतिश्यायज्वरविद्रधिकुष्ठहा। गुल्मशोषकफानाहव्रणहृद् वमनाग्रणीः।। (कै.नि. औषधि वर्ग ९००-९०२)

८. **अपरः श्वेतपिण्डीतः करहाटः कुरंजकः। चर्मकारतह्वः श्वेतचर्मद्रुस्तीक्ष्णकीलकः।।**
कृष्णोऽन्यो गन्धपिडीतः सूक्ष्मपिण्डीतकस्तथा। श्लक्षणः पिण्डीतकः पर्णपिण्डीतो वस्तिशोधनः।।
पिण्डीतः शीतलः स्वादुः कषायः कफपित्तहा।। (कै.नि. औषधि वर्ग ९०३-९०५)

९. **मदनश्छर्धनः पिण्डो नटः पिण्डीतकस्तथा । कराहाटो मरुबकः शल्यको विषपुष्पकः।।**
मदनो मधुरस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः। वान्तिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः।।
ह्रक्षः कुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः।। (भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग १६०-१६१)

१०. **मदनः शल्यकैडर्यः पिण्डी धाराफलस्तथा । तरटः करहाटश्च राहुः पिण्डातकः स्मृतः।।**
घण्टालो मादनो हर्षो घण्टाख्यो बस्तिशोधनः। ग्रन्थिफलो गोलफलो मदनाह्वश्च विंशतिः।।
मदनः कटुतिक्तोष्णः कफवातव्रणापहः। शोफदोषापहश्चैव वामने च प्रशस्यते ।। (रा.नि. शाल्मल्यादि वर्ग ६६-६८)

◘◘◘

६१. मण्डूकपर्णी (MANDUKPARNI)

मण्डूक इव पर्णमस्य। मण्डूकाकृति पर्णमस्य। यद्वा मण्डूक इवोत्तानोदरं पर्णमस्य। -मण्डूकवत् पत्र।

B.N.- **Centella asiatica (L.) Urb.**
Centella- Many.
asiatica- Belonging to Asia.

Family- Apiaceae

क्षेत्रीय नाम (Regional Names)

संस्कृत - मण्डूकपर्णी	**हिन्दी** - वेंगसाग
बंगाली - थुलपूड़ी	**गुजराती** - खण्डब्राह्मी
मराठी - करिवड़ा	**English** - Indian pennywort

पर्याय (Synonyms)

माण्डूकी (भा.प्र.)- मण्डूकवत् भूमि पर फैलने वाली लतायें।
महौषधि (भा.प्र.)- औषधि में श्रेष्ठ।
त्वाष्ट्री (भा.प्र.)- देवी लक्ष्मी इसमें वास करती है।

वर्गीकरण (Classification of Dravya)

चरक - वयस्थापन महाकषाय।
भा.प्र. - गूडूच्यादि वर्ग।

उत्पत्ति स्थान (Habitat)- समस्त भारत में प्राय: जलाशय एवं नदी-नालों के किनारे प्राप्त होती है।

वानस्पतिक स्वरुप (Morphology)- वर्षायु क्षुप, जिसका लम्बा काण्ड जमीन पर फैलता है। प्रत्येक पर्व से मूल, पत्र, पुष्प तथा फल निकलते हैं। पत्र-गोल, वृक्काकृति, प्राय: सात सिराओं से युक्त होते हैं। पुष्प-छोटे रक्तवर्ण के वसन्त ऋतु में आते हैं। मूल-पतली सूत्रवत् होती है। इसको हमेशा छाया में सुखाते हैं क्योंकि धूप में उड़नशील तैल उड़ जाते हैं इसीलिए इसका क्वाथ एवं फाण्ट नहीं बनाते हैं।

जातियाँ (Varieties)- वानस्पतिक दृष्टि से मुख्यरुप से इसकी (३) जातियाँ पायी जाती है:-

1. Hydrocotyle javanica Thunb.
2. Hydrocotyle rotundifolia Roxb.
3. Malva rotundifolia Linn.

रासायनिक संगठन (Chemical composition)- Hydrocotyline, Thankuniside, Centelloside, Centic acid, Centellelic acid, Centelloride, Centoic acid etc.

रस पञ्चक (Rasa Panchaka)-

रस - तिक्त	**गुण** - लघु
विपाक - मधुर	**वीर्य** - शीत
प्रभाव - मेध्य	

दोषकर्म- कफपित्तशामक। तिक्त रस होने के कारण यह कफपित्त शामक है।

कर्म- रसायन, बल्य, वय:स्थापन, मेध्य, रक्तशोधक, कुष्ठघ्न, व्रणरोपक, विषघ्न, हृद्य, कास, ज्वरघ्न अतिमात्रा में मादक है।

आमयिक प्रयोग (Therapeutic Administration)-

१. मण्डूकपर्णी का स्वरस क्षीर के साथ मेध्य कर्म हेतु प्रयोग करते हैं। (च.चि. I/३/३०-३१)

२. मण्डूकपर्णी का घी में भूनकर एक माह प्रयोग, मेध्य है। (अ.हृ.उ. ३९/१६५)

३. मण्डूकपर्णी, यष्टिमधु और शुण्ठी के प्रयोग से कास और शोष में लाभ मिलता है। (अ.हृ.चि. ३/११९) (च.चि. ११/९१)

प्रयोज्यांग (Useful parts)- पंचांग।

मात्रा (Dose)- स्वरस- १०-२० मिली, चूर्ण- ०.५-१ ग्राम।

प्रयोज्यांग (Important Formulation)-

विशिष्ट योग	रोगाधिकार
१. सारस्वत चूर्ण	मेध्य
२. सारस्वतारिष्ट	मानसिक विकार
३. सारस्वत घृत	कुष्ठ, अर्श

अपमिश्रण एवं प्रतिनिधि (Adulteration and substitution)- समान गुणकर्म होने के कारण ब्राह्मी एवं मण्डूकपर्णी एक-दूसरे के प्रतिनिधि के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। अन्य जातियों जैसे- Merremia emarginata Hallier f., Hydrocotyle javanica Thunb, Hydrocotyle rotundifolia Roxb. and Malva rotundifolia Linn. का भी प्रतिनिधि के रुप में प्रयोग करते हैं।

Researches

1. To evaluate th specific effect of centella asiatica (CA), vitamins, glycolic acid and their mixture preparations to stimulate collagen & fibronectin synthesis in cultured human fibroblast cells. (Hashim P. Pak J Pharm Sci. 2014 Mar, 27 (2): 233-7.)
2. The present study was undertaken to asses analgesic and antiinflammatary properties of centella asiatica leaf centracts. (Saha S. Gusia T, sengha T. ISRN Pharmcol. 2013 Nov. 21:, 2013: 789613.)
3. To determine the antioxidant properties of two well known memory enhancer medicinal plants baccopa monnieri and centella asiatica (Meena H, Pandey HK, Arya MC, Indian J Pharmacol 2012 Jan, 44 (1) : 114-7.)

Note- विस्तृत विवरण हेतु पुस्तक के इसी भाग में वर्णित ब्राह्मी द्रव्य देखें।

शास्त्रीय संदर्भ (Classical References)

१. **मण्डूकपर्ण्याः स्वरसः प्रयोज्यः.......मेध्यानि चैतानि रसायनानि.....।** (च.चि. १/पाद-३ (३०-३१)

२. **सुवर्चलाऽऽदित्याकान्ता सूर्यभक्ता सुखोद्भवा। मण्डूकपर्णी मण्डूकी वरदाऽऽदित्यवल्ल्यापि ।।**
आदित्यभक्ता कटुका तथोष्णा स्फोटकापहा। सरस्वती सरा स्वर्या रसायनविधौ हिता ।। (ध.नि. करवीरादि वर्ग ८७-८८)

३. **मण्डूकब्राह्मी मण्डूकी सुप्रिया ब्रह्मपुत्रिका। सारस्वतप्रदा हृद्या श्लेष्मश्वासविनाशिनी ।।** (सो.नि. करवीरादि वर्ग ५३६)

४. **सरस्वती सत्यवती स्मारिणी ब्रह्मचारिणी। सत्यनामा ब्रह्मसोमा ब्राह्मी ब्रह्मसुवर्चला ।।**
मण्डूकपर्णी मण्डूकी ब्राह्मणी दुर्दुरच्छदा ।। सुनाया मुनिका त्वाष्ट्री दिव्या मेध्या महौषधिः।
कपोतवंका लावण्या वयःस्था सोमवल्लयपि ।। ब्राह्मी शीता सरा तिक्ता कषाया मधुरा लघुः ।
मेध्या स्वर्या स्वादुपाका हृद्यापुष्या रसायनी। मतिस्मृतिप्रदा हन्ति कुष्ठकण्डूज्वरं मलान् ।
शोफारुचिविषश्वासमोहास्त्रपाण्डुताः ।। (कै.नि. औषधि वर्ग ७१९-७२३)

५. **ब्राह्मी हिमासरा तिक्ता लघुर्मेध्या च शीतला । कषाया मधुरा स्वादुपाकाऽऽपुष्या रसायनी ।।**
स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्त्रकासजित् । विषशोथज्वरहरी तद्वन्मण्डूकपर्णिनी ।। (भा.प्र. गुडूच्यादि वर्ग २८०-२८१)

▪▪▪

६२. मंजिष्ठा (MANJISHTHA)

मञ्जौ शोभने वर्णे शरीरं स्थापयतीति, रक्तशोधत्वात् ।- यह रक्तशोधक होने के कारण शरीर के वर्ण को अच्छा बनाती है।

B.N.- **Rubia cordifolia Linn. Syn. Rubia manjith Roxb. ex fleming**

Rubia-Red colour.

Cordifolia- Plant having heart shaped leaves.

Cor-The heart.

Folium (Latin)- A leaf.

Manjith- hindi name of the plant

Family- Rubiaceae

क्षेत्रीय नाम (Regional Names)

संस्कृत - मंजिष्ठा	**हिन्दी** - मंजीठ
बंगाली - मंजिष्ठा	**गुजराती** - मजीठ
मराठी - मजीठा	**English** - Indian Madder

१०. उशीर (USHIR)

उष्यते इष्यते सर्वैः- इसके आल्हादकारक गंध के कारण इसे सब लोग चाहते हैं।

B.N.- **Vetiveria zizanoides Linn. Nash. Syn. Andropogon muricatus Retz.**

Vetiveria- Vetiver- derived from Tamil word which means root that is dugged up.

zizanoides- by the river side.

Family- Poaceae

क्षेत्रीय नाम (Regional Names)

संस्कृत - उशीर	**हिन्दी** - खस
उड़िया - उशीरा	**बंगाली** - खस-खस
गुजराती - सुगंधिवालो	**मराठी** - बाला
English - Khas grass	

पर्याय (Synonyms)

नलद (भा.प्र.)- गन्ध देने वाला।
समगन्धिक (भा.प्र.)- प्रशस्त गन्ध युक्त।
जलवास (रा.नि.)- जलप्राय: स्थान में होने से।
हरिप्रिय (रा.नि.)- ईश्वर को प्रिय।
वारितर (रा.नि.)- जल प्राय: स्थानों में उत्पन्न।
अमृणाल (भा.प्र.)- कमलनाल के समान।

९१. वचा (VACHA)

वक्ति, वक्तुं प्रेस्यतीति वाक्शक्ति वर्धयतीत्यर्थः।- वाक्शक्ति की वृद्धि करने से इसे वचा कहते हैं।

B.N.- **Acorus calamus Linn.**

Acorus (Latin)- private, marked by the loss, kore-pupil of the eye (useful in eye disease)

calamus- Derived from Greek word meaning marshy, grows in marshy land

Family- Araceae

क्षेत्रीय नाम (Regional Names)

संस्कृत - वचा	**हिन्दी** - घोड़वच
बंगाली - सफेद वच	**गुजराती** - घोड़ावज
मराठी - वेखण्ड	**पंजाबी** - वर्ज, वरज
English - Sweet flag	

पर्याय (Synonyms)

उग्रगंधा (भा.प्र.)- सुगंध उग्र होती है।
गोलोमी (भा.प्र.)- गाय की तरह रोमयुक्त कन्द।
क्षुद्रपत्री (भा.प्र.)- पत्र क्षुद्र होने से।

१७. यष्टीमधु (YASHTIMADHU)

यष्टीरुपं मधुकं इति।- इसका काष्ठ मधुर होने से इसे यष्टिमधु कहते हैं।

B.N.- **Ghycyrrhiza glabra L.**

Glycyrrhiza- glykys (Greek)- Sweet
rhiza (Greek)- Root, liquorice

glabra (Latin)- Smooth

Family- Fabaceae

क्षेत्रीय नाम (Regional Names)

संस्कृत - यष्टिमधु	**हिन्दी** - मुलेठी
उड़िया - जातिमधु	**बंगाली** - यष्टोमधु
गुजराती - जेठीमाधा	**मराठी** - जेष्ठामधा
पंजाबी - जेठीमध	**English** - Liquorice root

पर्याय (Synonyms)

यष्टिमधुक (भा.प्र.)- काष्ठ मधुर होने के कारण।
मधुक (सो.नि.)- मूल का रस मधुर होने से।
शोषनाशिनी (सो.नि.)- शोषनाशक।
सौम्या (सो.नि.)- वीर्य-शीत।
क्लीतक (भा.प्र.) क्लीवता को नष्ट करता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Question)

१. निम्नलिखित में से तपस्विनी किसका पर्याय है? (AIAPGET-2023)

(a) गंधप्रसारिणी (b) कुष्ठ
(c) जटामांसी (d) मदनफल

२. 'अस्य फलं मातुलपुत्रकम्' निम्नलिखित में किसका फल मातुलपुत्रक कहा जाता है। (AIAPGET-2023)

(a) करञ्ज (b) मदनफल
(c) धतूरा (d) पिप्पली

३. Match List-I with List-II (AIAPGET-2023)

(Plant Name)	(Family)
(a) Shigru (शिग्रु)	I- Fabaceae
(b) Palasha (पलाश)	II- Anacardeaceae
(c) Bhallataka (भल्लातक)	III- Moringaceae
(d) Jyotishmati (ज्योतिष्मति)	IV- Celastraceae

(A) A-II, B-I, C-IV, D-II
(B) A-III, B-I, C-II, D-IV
(C) A-IV, B-II, C-III, D-I
(D) A-II, B-I, C-III, D-IV

४. The drugs having potential to precipitate 'Torsade de Pointes' (AIAPGET-2022)

(a) Minioxidil (b) Quinidine
(c) Quinine (d) Dopamine
(e) Cisapride

(A) केवल C,A एवं B
(B) केवल A,C एवं E
(C) केवल B,C एवं E
(D) केवल B,D एवं E

५. भावप्रकाश निघण्टु के अनुसार, किस गन्ध युक्त कुंकुम को उत्तम माना जाता है? (AIAPGET-2022)

(a) मधुगन्धि (b) पद्मगन्धि
(c) केतकी गन्ध युक्त (d) कस्तुरी गन्धि

Answer Key				
1 (c)	2 (c)	3 (b)	4 (c)	5 (b)

८३. अतिविषा में पाया जाता है?

(a) Atisine (b) Heteratisine

(c) Hetisine (d) All

८४. दीपनीयपाचनीय संग्रहाहिक सर्वदोषहराणां, किसके लिए कहा है?

(a) विदारीगंधा (b) मुस्त

(c) बिल्व (d) अतिविषा

८५. शुक्लकन्दा, भंगुरा, घुणवल्लभा, शृङ्गी, प्रतिविषा किसके पर्याय है?

(a) आमलकी के (b) वत्सनाभ

(c) अतिविषा के (d) शुण्ठी

८६. अतिविषा किसका घटक द्रव्य है?

(a) त्रिकर्षिक का (b) चातुर्भद्र का

(c) बालचतुर्भद्र का (d) सभी का

८७. अश्वगंधा को अंग्रजी में कहते है?

(a) Water Cherry (b) Malabar nut

(c) Marking nut (d) Fever nut

८८. बलदा, कुष्ठगंधी, वराहकर्णी किसके पर्याय है?

(a) सर्पगंधा (b) आरग्वध

(c) अश्वगंधा (d) अतिविषा

८९. अश्वगंधा का वानस्पतिक नाम है?

(a) Rauwolfia serpentina (b) Withania somnifera

(c) Curwia fistula (d) Aconitum hetrophylum

९०. अश्वगंधा किस कुल का द्रव्य है?

(a) Solanaceae (b) Compositae

(c) Apocyanaceae (d) Combretaceae

९१. बला त्रय है?

(a) बला, अतिबला, महाबला (b) बला, अतिबला, नागबला

(c) बला, अतिबला, राजबला (d) कोई नहीं

Answer Key								
83 (d)	84 (d)	85 (c)	86 (d)	87 (a)	88 (c)	89 (b)	90 (a)	91 (b)

१५४. धातकी निम्न में से किस योग का घटक द्रव्य है?
(a) पुष्यानुगचूर्ण (b) बृहद्गंगाधरचूर्ण
(c) अरविन्दासव (d) सभी

१५५. धमासा के पर्याय नाम है?
(a) धन्वयास, दुरालभा (b) समुद्रान्ता, गान्धारी
(c) दुस्पर्शा, कच्छुरा, अनन्ता (d) सभी

१५६. धन्वयास किस कुल का द्रव्य है?
(a) Leguminosae (b) Compositae
(c) Zygophyllaceae (d) Euphorbiaceae

१५७. धन्वयास का वानस्पतिक नाम है?
(a) Fagonia cretica (b) Woodfordia fruticosa
(c) Alhagi camelorum (d) Clerodendron serratim

१५८. धमासा का वीर्य है?
(a) शीत (b) उष्ण
(c) अनुष्णशीत (d) इनमें से कोई नहीं

१५९. एरण्ड के पर्याय नाम है?
(a) गन्धर्वहस्त, पंचागुल, वर्धमान (b) उत्तानपत्रक, व्याघ्रपुच्छ, उरूबूक
(c) दीर्घदण्ड, वातारि, चित्रबीज (d) All the above

१६०. —------------वृष्यवातहराणां । रिक्त स्थान भरें।
(a) चित्रकमूल (b) पुष्करमूल
(c) एरण्डमूल (d) विदारीगंधा

१६१. भा.प्र. निघण्टु में एरण्ड का वर्णन है?
(a) वटादि वर्ग में (b) कर्पूरादि वर्ग में
(c) पुष्प वर्ग में (d) गुडूच्यादि वर्ग में

१६२. एरण्ड में पाया जाने वाला रासायनिक तत्त्व है?
(a) Ricin (b) Hyocine
(c) Gallic acid (d) Acotine

Answer Key								
154 (d)	155 (d)	156 (c)	157 (a)	158 (b)	159 (d)	160 (c)	161 (d)	162 (a)

७४९. विडंग का प्रयोज्यांग है-
(a) पत्र (b) फल
(c) मूल (d) तना

७५०. Glycyrrhiza glabra, लैटिन नाम द्रव्य का है-
(a) विडंग का (b) शतावरी का
(c) यष्टिमधु का (d) मेषश्रृंगी का

७५१. यष्टीमधु का पर्याय है-
(a) मधुक (b) क्लीतक
(c) सौम्या (d) उपरोक्त सभी

७५२. भा.प्र. में यष्टीमधु की जातियां बतायी गयी है-
(a) १ (b) २
(c) ३ (d) ४

७५३. यष्टीमधु का Chemical composition है-
(a) Glycyrrhizine (b) Liquirtin
(c) Glyayrrhizic acid (d) All

७५४. Liquorice root किस द्रव्य का अंग्रेजी नाम है-
(a) भल्लातक का (b) मधुक का
(c) निम्ब का (d) पाटला का

७५५. यष्टीमधु का स्वरूप है-
(a) क्षुप (b) वृक्ष
(c) लता (d) गुल्म

७५६. यष्टीमधु का प्रयोज्यांग है-
(a) तना (b) पुष्प
(c) फल (d) मूल

७५७. यष्टीमधु में अपमिश्रण (adultration) किया जाता है-
(a) शतावरी मूल का (b) गुञ्जामूल का
(c) पिप्पलीमूल का (d) कोई नहीं

❖•❖

Answer Key								
749 (b)	750 (c)	751 (d)	752 (b)	753 (d)	754 (b)	755 (a)	756 (d)	757 (b)

अनुक्रमणिका

अ

अंगारवल्ली 43
अगेथू 163,164
अग्निक 39
अग्निमंथ 163
अग्निमुखी 38
अग्रहा 77
अजभक्ष्या 77
अजमोद 171
अजमोदा 171
अजश्रृंगी 244,137
अजाजी 206
अडूसा 354
अतिबला 31
अतिरसा 317
अतिविष 26
अतिविषा 26
अतिसारघ्नी 26
अतीस 26
अधःशल्या 174
अध्यण्डा 133
अनन्तमूल 301
अनन्ता 301
अनलनामा 66
अनार 79
अनिलापह 216
अपराजिता 313
अपामार्ग 174
अपामार्गतण्डुल 175
अपेतराक्षसी 336
अफीम 167
अभया 103
अभीरु 317
अमलतास 12
अमृत 358
अमृतफल 9
अमृतवल्लरी 88
अमृता 09
अमृणाल 344
अमोघा 367
अम्बष्ठा 274
अमृता 89
अम्लपाकी 216
अम्लबृहती 184
अरंड 79
अरणी 163
अरण्य हरिद्रा 100
अरि 145
अरिष्ट 258,290
अरुणत्रिवृत 333
अरुणा 237
अरुष्कर 38
अरुष्करनिबंधन 39
अर्जुन 16
अर्जुननामाख्या 17
अर्धचंद्रा 333
अलम्बुषाभेद 224
अलाबूफला 184
अलेप्पी इलायची 195
अवल्गुज 180
अवाक्छत्रं 325
अविद्धकर्णिका 274
अव्यथा 104
अशोक 20
अशोकरोहिणी 141
अश्मघ्न 270
अश्वगंधा 23
अश्वमूत्री 306
अष्ट्रभक्ष्या 76
असगंध 23
असन 35
असितसुरसा 337
अस्थिश्रृंखला 178
अस्थिसंयोजक 178

Index

Abies pindrow 330
Abies webbiana 329
Abutilon hirtum 31
Abutilon indicum 31
Acacia catechu 144
Acacia farnesiana 145
Acacia suma 145
Achyranthus aspera 174
Achyranthes bidentata 175
Achyranthes rubra-fusca 175
Aconitum balfourii 360
Aconitum chasmanthum 360
Aconitum deinorrhizum 360
Aconitum falconeri 360
Aconitum ferox 358
Aconitum heterophyllum 26
Aconitum kashmiricum 27
Aconitum napellus 360
Aconitum palmatum 27
Aconitum spicatum 360
Acorus calamus 347
Adhatoda beddomei 355
Adhatoda vasica 354
Aegle marmelos 53
Aerva lanata 271
Allianthus excelsa 260
Allium ascalonicum 291
Allium laptophyllum 291
Allium sativum 290
Aloe barbadensis 148
Aloe chinensis 149
Aloe ferox 149
Aloe perryi 149
Aloe variegata 149
Aloe vera 148
Alpinia galanga 348
Amomum aromaticum 194
Amomum subulatum 194
Amomum xanthioides 194
Andrographis paniculata 210
Andropogan muricatus 344
Apium graveolens 171
Aristolochia indica 288
Arjun tree 16
Asafoetida 110
Asparagus cusillus 318
Asparagus filicinus 317
Asparagus racemosus 316
Asparagus Root 316
Asparagus sarmentosus 317
Azadirachta indica 258
Babreng 367
Bacopa monnieri 57
Bael Tree 53
Balsamodendron mukul 94
Barleria cristata 299
Barleria prionitis 299
Barleria strigosa 299
Bauhinia purpurea 126
Bauhinia vahlii 126
Bauhinia variegata 125
Belleric myrobalan 363
Berberis aristata 100
Berginia cilliata 270
Berginia ligulata 270
Bind weed 312
Biophytum sensitivum 224
Black catechu 144
Black pepper 240
Boerhavia diffusa 282
Boerhavia rependa 283
Boerhavia verticillata 283
Bombax malabarica 308
Boswellia carteri 307
Boswellia floribunda 307
Boswellia frereana 307

1- आमलकी पत्र

1- आमलकी फल

1- आमलकी

2- आरग्वध

2- आरग्वध फल

2- आरग्वध

3- अर्जुन पत्र

3- अर्जुन फल

3- अर्जुन

4- अशोक पत्र

4- अशोक पुष्प

4- अशोक

37- पुंकुटज

37- पुंकुटज पुष्प

37- पुंकुटज

38- लताकरंज

38- लताकरंज पुष्प

38- लताकरंज फल

39- लोध्र

39- लोध्र

39- लोध्र त्वचा

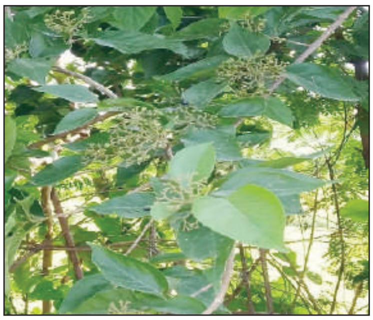
40- अग्निमन्थ

40- अग्निमन्थ

40- लघु अग्निमन्थ

53- जीरक

53- जीरक

53- कृष्ण जीरक

54- कालमेघ

54- कालमेघ

54- कालमेघ

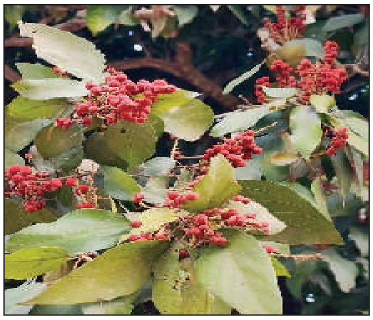
55- कम्पिल्लक

55- कम्पिल्लक

55- कम्पिल्लक

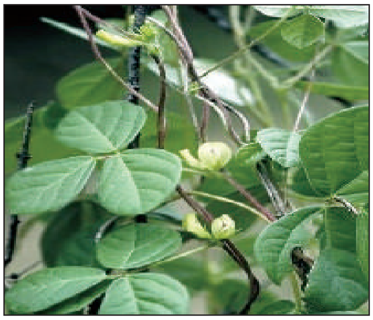
56- कुलत्थ

56- कुलत्थ

56- कुलत्थ

85- शुण्ठी (अदरक)

85- शुण्ठी (अदरक)

85- शुण्ठी

86- तालीशपत्र

86- तालीशपत्र

86- तालीशपत्र

87- त्रिवृत

87- त्रिवृत

87- त्रिवृत

88- तुलसी

88- कृष्ण तुलसी

88- तुलसी